

कृतिपत्रिका के लिए सूचनाएँ।

- १) सूचना के अनुसार गद्य, पद्य, विशेष अध्ययन तथा व्यावहारिक हिंदी की कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।
- २) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही उपयोग कीजिए।
- ३) सभी आकृतियों में उत्तर पेन से लिखना आवश्यक है।
- ४) व्याकरण विभाग में पूछी गयी कृतियों के उत्तरों के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।

(विभाग -१: गद्य- 20 अंक)

प्र.१ (अ). निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

दरबार की ओर से शर्ते सुनाई गई "कल प्रातःकाल नगर के बाहर वन में तुम दोनों का गानयुद्ध होगा। अगर तुम हार गए, तो तुम्हें मार डालने तक का तानसेन को पूर्ण अधिकार होगा और अगर तुमने उसे हरा दिया तो उसका जीवन तुम्हारे हाथ में होगा।"

नौजवान साधु ने शर्ते मंजूर कर ली। दरबार ने आज्ञा दी कि कल प्रातः काल तक सिपाहियों की रक्षा में हो यह नौजवान साधु बैजू बावरा था।

सूरज भगवान की पहली किरण ने आगरे के लोगों को आगरे से बाहर जाते देखा। साधु की प्रार्थना पर सर्वसाधारण को भी उसके जीवन और मृत्यु का तमाशा देखने की आज्ञा दे दी गई थी। साधु की विदवत्ता की ध्यान दूर-दूर तक फैल गई थी। जो कभी अकबर की सवारी देखने को भी घर से बाहर आना पसंद नहीं करते थे, आज ये भी नई पगड़ियाँ बाँधकर मिला अधिकर निकटा रहे थे।

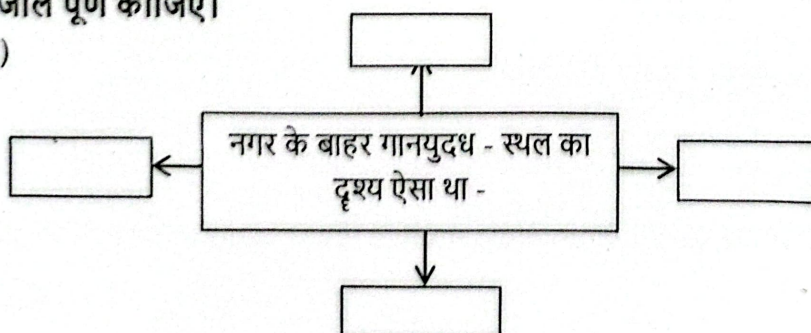
ऐसा जान पड़ता था कि आज नगर से बाहर वन में क्या नगर बस जाने को है वहाँ, जहाँ कनाते लगी थी, जहाँ चाँदनियों तनी थीं, जहाँ कुर्सियों की कतारे राजी थी। इधर जनता बढ़ रही थी और उद्धिग्नता और अधीरता से गानयुद्ध के समय की प्रतीक्षा कर रही थी। बालक को प्रातः कालीन मिठाई मिलने की आशा दिलाई जाए तो वह रात को कई बार उठ-उठकर देखता है कि अभी सूरज निकला है या नहीं ? उसके लिए समय रुक जाता है। उसके हाथ से धीरज छूट जाता है। वह व्याकूल हो जाता है। समय हो गया। लोगों ने आँख उठाकर देखा। अकबर सिंहासन पर था, साथ ही नीचे की तरफ तानसेन बैठा था और सामने फर्श पर नवयुवक बैजू बावरा दिखाई देता था। उसके मुँह पर तेज था, उसकी आँखों में निर्भयता थी।

अकबर ने घंटी बजाई और तानसेन ने कुछ सवाल संगीतविद्या के संबंध में बैजू बावरा से पूछे। बैजू ने उचित उत्तर दिए और लोगों ने हर्ष से तलियों पीट दीं। हर मुँह से "जय हो, जय हो", "बलिहारी, बलिहारी" की ध्वनि निकलने लगी।

इसके बाद बैजू बावरा ने सितार हाथ में ली और जब उसके पर्दों को हिलाया तो जनता ब्रह्मानंद में लीन हो गई। पेड़ों के पत्ते तक निःशब्द हो गए। वायु रुक गई। सुनने वाले मंत्रमुग्धवत सुधिहीन हुए सिर हिलाने लगे। बैजू बावरे की अंगुलियाँ सितार पर दौड़ रही थीं। उन तारों पर रागविद्या निछावर हो रही थी और लोगों के मन उछल रहे थे, थिरक रहे थे। ऐसा लगता था कि सारे विश्व की मस्ती यहीं आ गई थी।

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

(02)



२) निम्नलिखित शब्द समूहों के लिए गद्यांश में से ढूँढकर एक-एक शब्द लिखिए

(02)

- १) ब्रह्म स्वरूप के साक्षात्कार का दर्शन।
- २) जहाँ किसी प्रकार का शब्द न होता हो।
- ३) जो होश से रहित हो।
- ४) किसी से भी न डरने की भावना।

३) 'सच्चा कलाकार वह होता है जो दूसरों की कला का सम्मान करता है।' इस कथन पर ४० से ५० शब्दों में अपना मत व्यक्त कीजिए।

(02)

(आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

पाप काँपता है और अब उसे लगता है कि इस वेग में यह घिस जाएगा बिखर जाएगा। तब पाप अपना ब्रह्मास्त तोलता है और तोलकर सत्य पर फेंकता है। यह ब्रह्मास्त है श्रद्धा।

इन क्षणों में पाप का नारा होता है "सत्य की जय। सुधारक की जय।"

अब यह सुधारक की करने लगता है चरणवन्दना और उसके सत्य की माहिमा का गान और बखान।

सुधारक होता है करुणाशील और उसका सत्य सरल विश्वासी। यह पहले चौकता है, फिर कोमल पड़ जाता है और तब उसका वेग बन जाता है शांत और वातावरण में छा जाती है सुकुमारता।

पाप अभी तक सुधारक और सत्य के जो स्तोत्र पढ़ता जा रहा था, उनका करता है यूँ उपसंहार "सुधारक महान है, यह लोकोत्तर है, मानव नहीं, यह तो भगवान है, तीर्थकर है, अवतार है, पैगंबर है, संत है। उसकी वाणी में जो सत्य है, वह स्वर्ग का अमृत है। यह हमारा वंदनीय है, स्मरणीय है, पर हम पृथ्वी के साधारण मनुष्यों के लिए वैसा बनना असंभव है, उस सत्य को जीवन में उतारना हमारा आदर्श है, पर आदर्श को कब, कहाँ, कौन पा सकता है?" और इसके बाद उसका नारा हो जाता है, "महाप्रभु सुधारक वंदनीय है, उसका सत्य महान है, वह लोकोत्तर है।"

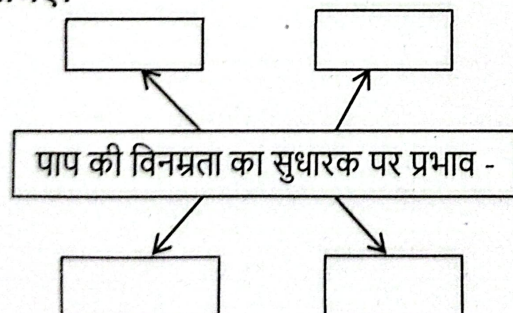
यह नारा ऊँचा उठता रहता है, अधिक-से-अधिक दूर तक उसकी गूँज फैलती रहती है, लोग उसमें शामिल होते रहते हैं। पर अब सबका ध्यान सुधारक में नहीं, उसकी लोकोत्तरता में समाया रहता है। सुधारक के सत्य में नहीं, उसके सूक्ष्म-से-सूक्ष्म अर्थों और फलितार्थों के करने में जुटा रहता है।

अब सुधारक के बनने लगते हैं स्मारक और मंदिर और उसके सत्य के ग्रंथ और भाष्य। बस यहाँ सुधारक और उसके सत्य की पराजय पूरी तरह हो जाती है।

पाप का यह ब्रह्मास्त अतीत में अजेय रहा है वर्तमान में भी अजेय है। कौन कह सकता है कि भविष्य में कभी कोई इसकी अजेयता को खंडित कर सकेगा या नहीं?

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

(02)



२) निम्नलिखित गद्यांश में से प्रत्यययुक्त शब्द ढूँढकर लिखिए।

(02)

- १)
- २)
- ३)
- ४)

३) 'स्मारकों और समाधियों का उद्देश्य' विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(02)

इ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग ८० से १०० शब्दों में लिखिए। (कोई दो)

(06)

- १) निराला जी की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।
- २) आदर्श बदला कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
- ३) निराला जी का आतिथ्य भाव स्पष्ट कीजिए।

ई) साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए।

(४ में से केवल २)

(02)

- १) सुदर्शन ने इस लेखक की लेखन परंपरा को आगे बढ़ाया है।
- २) लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जी की भाषाशैली।
- ३) निराला जी का मूल नाम लिखिए।
- ४) हिंदी का कुछ आलोचकों द्वारा महादेवी वर्मा को दी गयी उपाधि -

(विभाग: २ पद्य (२० अंक))

प.२ (अ). निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

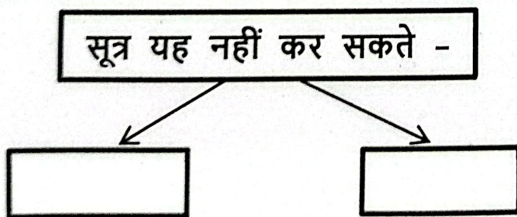
(06)

तुमने विश्वास दिया है मुझको,
मन का उच्छवास दिया है मुझको।
मै इसे भूमिपर सँभालूँगा,
तुमने आकाश दिया है मुझको।
सूत्र यह तोड़ नहीं सकते हैं,
तोड़कर जोड़ नहीं सकते हैं।
व्योम जाए, कहीं भी उड़ जाए,
भूमी को छोड़ नहीं सकते हैं।
सत्य है, राह में अंधेरा है,
रोक देने के लिए घेरा है।
काम भी और तुम करोगे क्या,
बढ़ चलो, सामने अंधेरा है।

१) कृति पूर्ण कीजिए।

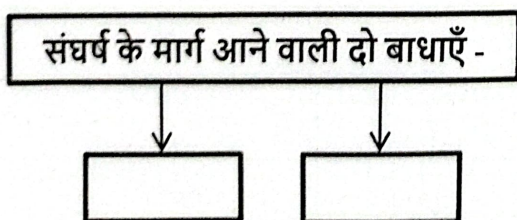
(01)

i)



(01)

ii)



२) निम्नलिखित शब्दों के शब्द युग्म बनाकर लिखिए।

(01)

- १) तोड़ - _____
- २) काम - _____

२) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(01)

१) विश्वास x _____

२) अँधेरा x _____

३) 'धरती से जुड़ा रहकर ही मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है' इस विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपना मत प्रकट कीजिए।

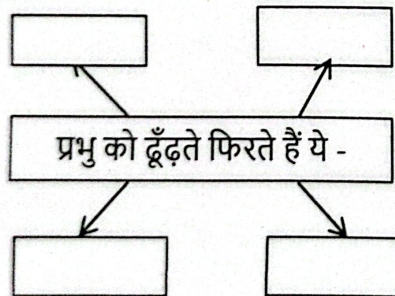
(02)

(आ) निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

तेरी गति भिति तू ही जाणै, क्या को आखि बखाणे
तू आपे गुपता, आपे प्रगट, आपे सब रंग भाणे
साधक सिद्ध, गुरु बहु चेले खेजत फिरहि फरमाणे
समहि बंधु पाइ इह भिक्षा तेरे दर्शन कउ कुरवाणे
उसी की प्रभु खेल रचाया गुरमुख सोभी होई ।
नानक सब जुग आपे वरते, दूजा और न कोई ॥
गगन में काल रविचंद दीपक बने ।
तारका मंडल जनक मोती ।
धूप मलयानिल, पवन चॅवरो करे,
सकल वनराइ कुलंत जोति ।
कैसी आरती होई भव खंडना, तोरि आरती ।
अनाहत शबद बाजत भेरी ॥

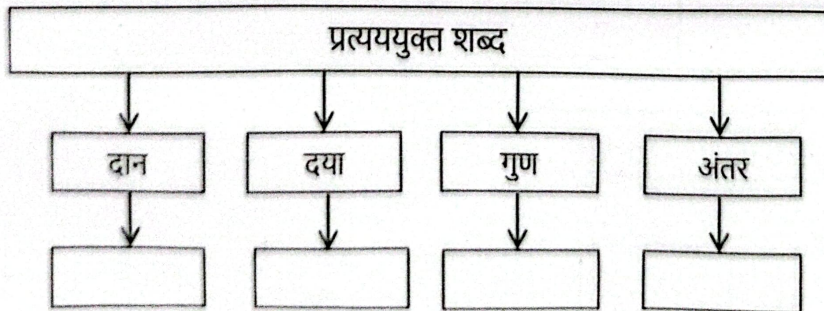
१) कृति पूर्ण कीजिए ।

(02)



२) लिखिए।

(02)



३) 'ईश्वर भक्ति में नाम स्मरण का महत्व होता है।' इस विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए।

(02)

इ) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 'पेड़ होने का अर्थ' कविता का रसास्वादन कीजिए।

- | | |
|------------------------------|------|
| १) रचनाकार का नाम। | (01) |
| २) पसंद की पंक्तियाँ। | (01) |
| ३) पसंद आने के कारण। | (02) |
| ४) कविता की केंद्रीय कल्पना। | (02) |

ई) साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए।

(४ में से २) (02)

- १) चतुष्पदियों के लक्षण लिखिए।
- २) दोहा छंद की विशेषता।
- ३) डॉ. मुकेश गौतम जी की रचनाएँ लिखिए।
- ४) नयी कविता का परिचय।

(विभाग : ३ विशेष अध्ययन - १० अंक)

प्र.३ (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

अपनी जमुना में
जहाँ घंटों अपने को निहारा करती थी मैं
वहाँ अब शस्त्रों से लदी हुई
अगणित नौकाओं की पंक्ति रोज-रोज कहाँ जाती है ?
धारा में बह-बहकर आते हुए टूटे रथ
जर्जर पताकाएँ किसकी हैं ?
हारी हुई सेनाएँ, जीती हुई सेनाएँ
नभ को कँपाते हुए युद्ध घोष, क्रंदन-स्वर,
भागते हुए सैनिकों से सुनी हुई
अकल्पनीय अमानुषिक घटनाएँ युद्ध की
क्या ये सब सार्थक हैं?
चारों दिशाओं से
उत्तर को उड़ उड़कर जाते हुए
गृद्धों को क्या तुम बुलाते हो
(जैसे बुलाते थे भटकी हुई गायों को)
जितनी समझ तुमसे अब तक पाई है कनु,
उतनी बटोरकर भी
कितना कुछ है जिसका
कोई भी अर्थ मुझे समझ नहीं आता है

१) कृति पूर्ण कीजिए।

(02)

कनुप्रिया के अनुसार यही युद्ध का सत्य स्वरूप है -

- १) _____
- २) _____
- ३) _____
- ४) _____

२) १) पद्यांश में प्रयुक्त शब्द युग्म ढूँढकर लिखिए ।

(01)

१) _____ २) _____

२) पद्यांश में प्रयुक्त उपसर्गयुक्त शब्द लिखिए।

(01)

१) _____ २) _____

३) 'युद्ध विनाश एवं शांति विकास का कारण होता है' इस विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए।

(02)

आ) निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग ८० से १०० शब्द में लिखिए ।(२ में से १)

(04)

१) राधा की दृष्टि से जीवन की सार्थकता बताइए।

२) 'कवि ने राधा के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा को शब्दबद्ध किया है' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

(विभाग: ४ व्यावहारिक हिंदी, अपठित गद्यांश एवं पारिभाषिक शब्दावली - २० अंक)

प्र.४(अ) निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग १०० से १२० शब्दों में लिखिए।

(06)

१) 'ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होइ' इस पंक्ति का भाव पल्लवन कीजिए।

अथवा

निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

मुझे न्यूज चैनल देखना अच्छा लगता है।" माँ ने भी स्नेहा की इस इच्छा का समर्थन किया था। स्नेहा ने पत्रकारिता का कोर्स ज्वाइन कर लिया।

पत्रकारिता की कक्षा का प्रथम दिवस... स्नेहा कक्षा में पहुँच गई। अन्य विद्यार्थी भी कक्षा में बैठे हुए थे। सबसे जान-पहचान हुई। यह सबके साथ घुल-मिल गई।

पहला लेक्चर प्रारंभ हुआ। प्रोफेसर ने पत्रकारिता पाठ्यक्रम का पहला पेपर पढ़ाना प्रारंभ किया। विषय था- फीचर लेखन। सबसे पहले उन्होंने फीचर लेखन की विभिन्न परिभाषाएँ को समझाते हुए कहा, "जेम्स डेविस फीचर लेखन क्षेत्र में एक चर्चित नाम है। ये कहते हैं, "फीचर समाचारों को नया आयाम देता है। उनका परिज्वण करता है, विश्लेषण करता है तथा उनपर नया प्रकाश डालता है।"

स्नेहा की पत्रकारिता और विशेष रूप में फीचर लेखन में बहुत रुचि थी। इसलिए उसने कहा, "सर ! पी.डी. टंडन ने भी फीचर लेखन को परिभाषित किया है।"

"हाँ.... पी डी. टंडन कहते हैं "फीचर किसी गद्य गीत की भाँति होता है, जो बहुत लंबा, नीरस और गंभीर नहीं होना चाहिए। अर्थात् फीचर किसी विषय का मनोरंजक शैली में विस्तृत विवेचन है।" स्नेहा इन परिभाषाओं को रटते रटते समझ गई थी कि फीचर समाचारपत्र का प्राणतत्व होता है। पाठक की प्यास बुझाने, घटना की मनोरंजनात्मक अभिव्यक्ति करने की कला का नाम ही फीचर है।

१) उत्तर लिखिए ।

(02)

जेम्स डेविस के अनुसार
फीचर -

१) _____

२) _____

३) _____

४) _____

२) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(02)

१) प्रथम x _____

२) दिवस x _____

३) नीरस x _____

४) प्यास x _____

३) 'समाचार लेखन' के बारे में अपने विचार ४० से ५० शब्दों में लिखिए।

(02)

आ) निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग ८० से १०० शब्द में लिखें। (२ में से १)

(04)

१) फीचर लेखन के सोपानों को स्पष्ट कीजिए।

२) पल्लवन की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

अथवा

इ) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

१) पल्लवन _____ निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका तैयार कर सकता है। (तर्क / व्यक्तित्व)

२) पाठक की _____ पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर फीचर लेखन किया जाना चाहिए। (ऐच्छिक / शैक्षिक)

३) पल्लवन के विषय प्रवर्तन _____ वाक्य से ही प्रारंभ हो जाता है। (दूसरे / प्रथम)

४) विषय का _____ शीर्षक फीचर की आत्मा है। (औचित्यपूर्ण / ज्ञानपूर्ण)

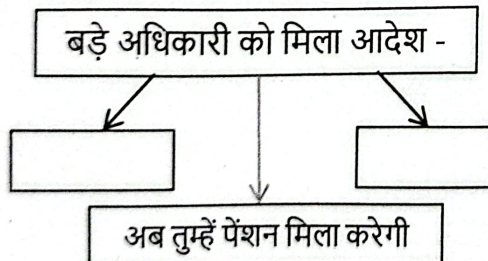
ई) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

बहुत-से मनुष्य सुख का अर्थ नहीं समझते। वे कार्य के अभाव अर्थात् आलस्य के साथ समय बिताने को सुख का साधन समझते हैं। यह बड़ी भारी भूल है। कहा जाता है कि उद्योगरहित और कार्यहीन मनुष्यों का मन शैतान का निवासस्थान होता है। भारतवर्ष के एक बड़े अधिकारी को यह आज्ञा मिली कि 'अब तुम्हारे नौकरी के दिन पूरे हो गए। तुमने ईमानदारी से काम किया, इसके उपलक्ष्य में तुम्हें पेंशन मिला करेगी।' जब उसे यह आज्ञा मिली तब यह बहुत ही खुश हुआ। खुशी इस बात की थी कि उसे अब काम नहीं करना पड़ेगा और मजे में दिन काटने का अवसर मिला करेगा। उसने खुशी के आवेश में अपने एक मित्र को यह पत्र लिख भेजा, "अब मैंने दिनभर के झंझटों से छुट्टी पाई। दिन-रात काम करने से जी उब गया था। अब मुझे दस गुनी तनख्वाह मिले तो भी मैं काम नहीं करूँगा।" दो-चार-आठ दिन बीत जाने पर जब वह बैठे-बैठे तंग आने लगा और जब उसने देखा कि काम किए बिन आलस्यपूर्ण जीवन बड़ा ही दुखदायी होता है, तब उसने उस मित्र को शोक के साथ लिखा, "भाई ! मैं समझता था कि काम न करने में आनंद है, परंतु बात बिलकुल उल्टी है। अब मुझे साफ-साफ मालूम हो रहा है कि मेरा पूर्व जीवन बहुत ही उत्तम और सुखपूर्ण था। जितना ही अधिक काम करना पड़ता था, उतना ही अधिक सुख मिलता था।" सारांश यह है कि हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहना मनुष्य देह-धर्म के विरुद्ध है। मनुष्य का मन पनचक्की के समान है। जब उसमें गेहूं डालते जाओगे तब वह गेहूं को पीसकर आटा बना देगी। परंतु जब उसमें गेहूं न डालोगे तब वह स्वयं अपने आप को पीसकर ज्वीण बना डालेगी।

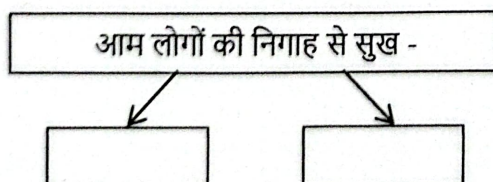
१) आकृति पूर्ण कीजिए।

(02)

१)



२)



२) १) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द युग्म ढूँढकर लिखिए। (01)

१) _____ २) _____

२) गद्यांश में प्रयुक्त अनेक शब्दों के लिए एक शब्द ढूँढकर लिखिए। (01)

१) जो दुख देता हो - _____

२) ऐसी चक्की जो पानी के बहाव की ऊर्जा से चलती हो - _____

३) 'आलस्यपूर्ण जीवन' विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए। (02)

ई) निम्नलिखित शब्दों के लिए हिंदी पारिभाषिक शब्द लिखिए। (८ में से ४) (04)

1) EXPERT

2) GAZETTED

3) BOND

4) ADVANCE

5) JUDGE

6) CUSTODIAN

7) TRANSACTION

8) RECORD

(विभाग : ५ व्याकरण - १० अंक)

प्र.५ (अ) निम्नलिखित वाक्यों का कोष्ठक में दी गयी सूचनाओं के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए। (४ में से २) (02)

१) दिन रात महान आरती होती है। (अपूर्ण भूतकाल)

२) होनहार पौधों के पत्ते चिकने होते हैं। (सामान्य भविष्यकाल)

३) काठ की हाँडी दुबारा नहीं चढ़ेगी। (सामान्य वर्तमानकाल)

४) वह पढ़ - लिख कर नौकरी करने लगा। (पूर्ण भूतकाल)

आ) निम्नलिखित पंक्तियों में अद्धृत अलंकार के नाम पहचानकर लिखिए। (४ में से २) (02)

१) एक म्यान में दो तलवारें, कभी नहीं रह सकती हैं।

किसी और पर प्रेम पति का, नारियाँ नहीं सह सकती हैं।

२) मोती की लड़ियों से सुंदर, झरते हैं झाग भरे निर्झर।

३) कहत, नहत, रीझन, खिझत, मिलन, खिलत, लवियात।

भरे भौन में करत है, नैननु ही सौ बात।

४) झूठे जानि न संग्रही, मन मुँह निकसै बैन।

याहि ते मानहुँ किए बातन की विधि नैन।

इ) निम्नलिखित पंक्तियों में अद्धृत रस पहचानकर उनके नाम लिखिए। (४ में से २) (02)

१) माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।

कर का मनका डारि कै, मन का मनका फेर।

२) बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।

कर बिनु कर्म करे विधि नाना।

आनन रहित सकल रस भोगी।

बिनु वाणी व्यक्ता, बड़ जोगी।

३) इस काल मारे क्रोध के

तन काँपने उनका लगा।

मानो हवा के जोर से

सोता हुआ सागर जगा।

४) समदरसी है नाम तिहारो, सोई पार करो।

एक नदिया एक नार कहावत, मैलो नीर भरो।

एक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिक परो,

सो सुविधा पारस नहीं जानत, कंचन करत खरो।

ई) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए।(४ में से २) (02)

- | | |
|-------------------------------|----------------------------|
| १) दिन दूना रात चौगुना बढ़ना। | २) घाट - घाट का पानी पीना। |
| ३) कटे पर नमक छिड़कना। | ४) ओखली में सिर देना। |

उ) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए।(४ में से २) (02)

- | | |
|----------------------------|---|
| १) वह उसका काम कर रहे हैं। | २) उसने भगवान की नाम की माला पहन ली है। |
| ३) वह स्वरग का अमरित है। | ४) उसका नाक कट गया। |
-